

कपास नई खोज



भा.कू.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 4 खंड: 2 फरवरी 22-28, 2015

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

डॉ. के.आर.क्रांति., के.क.अ.सं., नागपुर ने दि. 28.02.2015 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह की अध्यक्षीयता की। डॉ. ए.के.जोशी, महाप्रबंधक रीजनल रिमोट सेंसिंग सेंटर, इसरो/अंतरिक्ष विभाग, नागपुर मुख्य अतिथि और वक्ता थे। डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण विभाग ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। डॉ. जी.बालपुब्रमणि, प्रधान वैज्ञानिक, जैव प्रौद्योगिकी कार्यक्रम का कार्यक्रम-उद्घोषक थे। विभिन्न प्रभागों के प्रमुखों, सभी वैज्ञानिकों, अनुसंधान साथियों, वरिष्ठ अनुसंधान साथियों, परियोजना सहायकों, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों उपस्थित थे। डॉ. ए.के. जोशी ने "मंगल्यान- भारत का मंगल ग्रह मिशन" की शीर्षक के अपनी भाषण में मंगल ग्रह में मंगल्यान प्रक्षेपिक करने के लिए इसरो के कदम-वार क्रियान्वयन मिशन पर विस्तार विवरण दिया। पृथ्वी और मंगल के बीच के अंतर पर विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने सबसे बड़ा ज्वालामुखी, ओलंपस मॉन्स, सबसे बड़ी घाटी -वैलेस मेरानेरीस नदी प्रणालियों और मंगल ग्रह में बर्फ गठन के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मंगल्यान के घटकों के बारे में - मंगल ग्रह रंगीन कैमरा-दृश्य स्पेक्ट्रम में छवियों को प्रदान करने के लिए-मंगल ग्रह के निवासी सतह के तापमान और उत्सर्जन को मापने के लिए- थर्मल इमेजिंग आईआर स्पेक्ट्रोमीटर-सतह की संरचना, मंगल ग्रह के खनिज की मैपिंग करने देना, मिथेन सेंसर - मंगल ग्रह पर जीवन का पता लगाने के लिए, मंगल ग्रह इनोस्फेरीक तटस्थ संरचना विश्लेषण एवं लिमेन आल्फा फोटोमीटर मंगल ग्रह का निवासी ऊपरी वायुमंडल के पलायन प्रक्रियाओं का अध्ययन ड्युडीरियेम-एच-2 उपलब्धता के माध्यम से - इन सभी विषय उनकी प्रस्तुति में बताये गये। एक सक्रिय परस्पर संवादात्मक सत्र के अंत में आयोजित की गई थी। डॉ. जी. डॉ. जी. बालपुब्रमणि, प्रधान वैज्ञानिक, जैव प्रौद्योगिकी, ने धन्यवाद का प्रस्ताव पेश किया।



अंक: 4 खंड: 2 फरवरी 22-28, 2015

बैठकों

एम एस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन (एम.एस.एस.आर.एफ) ने अपनी हिस्सेदारी के साथ दि. 22.2.2015 एवं 23.2.2015 को के.क.अ.सं., नागपुर में एक बैठक का आयोजन किया। एम.एस.एस.आर.एफ वर्ष 1987 में गैर-लाभकारी ट्रस्ट के रूप में प्रोफेसर एम.एस. स्वामीनाथन से उनके द्वारा प्राप्त प्रथम विश्व खाद्य पुरस्कार के आय से स्थापित किया गया था। फाउंडेशन कृषि और ग्रामीण विकास हेतु आधुनिक विज्ञान के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं आदिवासी और ग्रामीण समुदायों की आजीविका के विकास एवं जीवन में सुधार प्रौद्योगिकी के प्रसार द्वारा करने के उद्देश्य में किया गया। के.क.अ.सं., नागपुर में आयोजित बैठक की कार्यसूची, दक्षिण एशिया में कृषि के लिए इस्तेमाल पोषण के तहत महिलाओं के सशक्तिकरण (लान्सा) पर था। लान्सा, एम.एस.एस.आर.एफ के साथ एक नई अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान साझेदारी है और इसका ध्यान केंद्रित नीतियों, दक्षिण एशिया में बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार करने के उपायों और रणनीतियों पर हैं। बैठक में डॉ.के.आर.क्रांति,निदेशक, के.क.अ.सं., नागपुर एवं डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण विभाग ने भाग लिया। डॉ. स्वामीनाथन के अपनी यात्रा के दौरान, उन्हें के.क.अ.सं., नागपुर के निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया था।



वैज्ञानिक वार्ता



साप्ताहिक वैज्ञानिक भाषण के एक भाग के रूप में डॉ. एम. अमुथा, वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) ने "एन्डोसिम्बायान्ट्स- कीट प्रबंधन के लिए अप्रयुक्त उपकरण" पर दि. 23.2.2015 को एक भाषण दिया। इस संगोष्ठी में माईटोगान्द्रिया एवं क्लोरोप्लास्ट के विकास हेतु एन्डोसिम्बायान्ट्स एवं एन्डोसिम्बायासिस के सिद्धांत के इतिहास के बारे में रूपरेखा प्रस्तुत किया गया। कीड़ों में एन्डोसिम्बायान्ट्स का वर्गीकरण और उनकी विशेषताओं, प्राथमिक और माध्यमिक एन्डोसिम्बायान्ट्स, कीड़े में एन्डोसिम्बायान्ट्स की भूमिका और कैसे एन्डोसिम्बायान्ट्स कीट प्रबंधन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है इस सभी का विवरण दिए गये।

सामान्यतः कीड़े और एन्डोसिम्बायान्ट्स के बीच एक पारस्परिक संबंध रहता है। कीट के समुचित विकास और अस्तित्व के लिए एन्डोसिम्बायान्ट्स कीड़ों में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। वे होस्ट के लिए पोषक तत्व प्रदान करते हैं; वे भोजन के पाचन के लिए मददगार रहे हैं जो होस्ट के विकास, प्रजनन के लिए आवश्यक है और होस्ट में उन्मुक्त प्रदान करते हैं। वे होस्ट में कीटनाशक प्रतिरोध और तनाव सहिष्णुता उपलब्ध कराने के द्वारा उनकी रक्षा करती हैं, एवं फफूंदीय और जीवाणु और पारासिटाईड संक्रमण के लिए प्रतिरोध प्रदान करते हैं। इसलिए एन्डोसिम्बायान्ट्स कीट प्रबंधन के लिए दो तरीके द्वारा इस्तेमाल किया जा सकता है, कीट की जरूरी सिम्बायान्ट्स के विघटन द्वारा या कीट स्थिति के लक्षण को एन्डोसिम्बायान्ट्स द्वारा बाधित करने के लिए होस्ट में शुरू करना है। एन्डोसिम्बायान्ट्स भी होस्ट में अपने स्थान के आधार पर कमेन्सेल से रोगाणु में परिवर्तन कर लेते हैं। हाल ही में शोध, जीन साईलेन्सिंग, प्रोटीओमिक्स और ट्रान्सक्रिप्टोमिक्स के स्तर के साथ जा रहे हैं। इसलिए, एन्डोसिम्बायान्ट्स कीट कीट प्रबंध के लिए अप्रयुक्त संसाधन हैं।



सेवानिवृत्ती

श्री. एस.एस.सहारे, कुशल सहायक कर्मचारी को भा.कृ.अनु.प.-के.क.अ.सं., - कल्याण क्लेब द्वारा दि. 28.2.2015 को उनकी सेवानिवृत्ती के दौरान बिधाई दी गयी। डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण विभाग एवं कार्यवाहक निदेशक द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। सभी कर्मचारियों ने इस समारोह में भाग लिया और श्री सहारे के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., नागपुर

प्रमुख संपादक: डॉ. नदिनी गोक्टे-नाखडेकर

संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन

जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रूपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार

हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभ्रशी एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश

निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुशवाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-4, खंड-2, 2015, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन <http://www.cicr.org.in/News Letter.html> में उपलब्ध है।

कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है।

कपास नई खोज-के.क.अ.सं., समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.

दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com

